वर्ष 2026 | अंक 04 | अक्टूबर - दिसंबर 2025

संपर्क सरिता

संपादक-मंडल

निदेशक
प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी

संपादक
प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित

सह-संपादक
श्रीमती बबली चतुर्वेदी

डिज़ाइन
श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी

छायांकन
श्री रितेन्द्र पवार

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल (समविश्वविद्यालय विशिष्ट श्रेणी शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, शामला हिल्स, भोपाल 462002, (म.प्र.) भारत

मोशल मीडिया लिंक
twitter.com/nitttrbpl
faceboo.com/nitttrbhopalofficial
instagram.com/nitttrbhopal

हमारे प्रेरणा स्रोत

"हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।"

—नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

"भारत की प्रत्येक भाषा, भारत की संस्कृति का गहना है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है और किसी भी भारतीय भाषा से हिंदी की प्रतिस्पर्धा नहीं है।"

—अमित शाह (गृह एवं सहकारिता मंत्री)

संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: पॉलीटेक्निक शिक्षा में "नवाचार एवं क्रियान्वयन" विषय पर दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

समग्र और राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा ही समय की मांग — डॉ. अतुल कोठारी

संस्थान और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला "राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: पॉलीटेक्निक शिक्षा में नवाचार एवं क्रियान्वयन" का समापन 02 नवम्बर 2025 को हुआ। इस कार्यशाला का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में पॉलिटेक्निक शिक्षा की भूमिका को सुदृढ़ करना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम संरचना, बहु-विषयकता और कौशल विकास को बढ़ावा देना, अनुभवात्मक शिक्षा, उद्योग-आधारित परियोजनाओं और नवाचार को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना, तकनीकी शिक्षा के माध्यम से स्व-रोज़गार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना, नीति निर्माताओं, शिक्षकों और संस्थागत नेतृत्व के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना तथा सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करें और अंतर-क्षेत्रीय संवाद को सुदृढ़ करना था।

समापन सत्र में संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने शैक्षणिक संस्थानों को नए अवसरों और चुनौतियों के लिए तैयार रहने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कौशल और उद्यमिता विकास में संस्थानों की भागीदारी बेहद महत्वपूर्ण है। कार्यशाला में देशभर से आए तकनीकी शिक्षा निदेशक, प्राचार्य, शिक्षक और नीति-निर्माता शामिल हुए, जिन्होंने शिक्षा प्रणाली में नवाचार, कौशल विकास और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई सुझाव दिए। कार्यशाला में विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। प्रो. नरेंद्र थापक ने स्किल डेवलपमेंट, परीक्षा सुधार और पाठ्यक्रम कार्यान्वयन के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। बिहार के तकनीकी शिक्षा निदेशालय के संयुक्त निदेशक श्री चंद्र शेखर सिंह ने संस्थान द्वारा विकसित पाठ्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि बिहार राज्य में सभी प्रक्रियाओं को डिजिटल किया गया है। वहीं, प्रो. मनीष भार्गव ने व्यावसायिक प्रशिक्षण में पॉलीटेक्निक संस्थानों के महत्व पर विचार व्यक्त किए।

समापन अवसर पर डॉ. अतुल कोठारी, सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने वैल्यू एजुकेशन के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यह हर विषय में समाहित किया जाना चाहिए, न कि एक अलग पाठ्यक्रम के रूप में। श्री मोहित श्रीवास्तव ने कहा कि स्किल और मानवीय मूल्य का समावेश ही इस शिक्षा नीति का प्रमुख उद्देश्य है। कार्यशाला में 250 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला में प्रो. परेश कोटक, डॉ. पिंकेश शाह, प्रो आशीष देशपांडे, डॉ. रणजीत सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

"आत्मनिर्भर भारत के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी में सृजन" पर संगोष्ठी का आयोजन

उद्योगों से हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) की अपेक्षाएँ

रक्षा उत्पादन क्षेत्र के स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने और शिक्षा जगत, स्थानीय उद्योगों और रक्षा निर्माताओं के बीच सहयोग को मज़बूत करने के प्रयास हेतु, संस्थान में "आत्मनिर्भर भारत के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी में सृजन" संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) नासिक सीईओ श्री साकेत चतुर्वेदी ने मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि, भारत की वास्तविक शक्ति हमारे युवा इंजीनियर्स, अनुसंधान संस्थानों और उद्योग जगत की आपसी साझेदारी में है। यदि हम टेक्नोलॉजी को स्वदेशी रूप से विकसित करने की दिशा में मिलकर कार्य करें, तो आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक रक्षा और एविएशन सेक्टर में नेतृत्व स्थापित कर सकता है। श्री आर.के भारती ने इस संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि निटर भोपाल की यह पहल सराहनीय है और एविएशन और एयरोस्पेस के क्षेत्र में एचएएल और प्राइवेट इंडस्ट्रीज के बीच में को-ऑपरेशन और कोलैबोरेशन जरुरी है। डिफेन्स के क्षेत्र में पार्ट्स की आपूर्ति जेट की स्पीड में उपलब्ध होना आवश्यक है। श्री पी.आर बघेल ने "फाइटर एयरक्राफ्ट के डिज़ाइन, डेवलपमेंट और सर्टिफिकेशन" विषय पर व्याख्यान दिया

श्री चतुर्वेदी ने एचएएल के स्वदेशीकरण प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि आज एचएएल न केवल लड़ाकू विमान विकास में अग्रणी है, बल्कि हम कई महत्वपूर्ण प्रणालियों को पूरी तरह से स्वदेशी बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। इस मिशन में निटर जैसे संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। संस्थान के निदेशक प्रो. सी सी त्रिपाठी ने कहा कि मध्य प्रदेश स्वदेशी तकनीकी विकास में मजबूत भूमिका निभाने को तैयार है, और हमारा संस्थान इसमें एक केंद्रीय ज्ञान-सहयोगी संस्थान के रूप में उभर रहा है। संस्थान मध्य प्रदेश के उन संस्थानों की क्षमताओं पर एक व्यापक रिपोर्ट तैयार कर रहा है जो एचएएल द्वारा आवश्यक उत्पादों के निर्माण और विकास में योगदान दे सकते हैं।

डॉ. अजीत भंडाकर ने "रक्षा प्रौद्योगिकी में स्वदेशीकरण" विषय पर चर्चा की। अन्य अतिथियों में श्री अशोक पटेल, श्री सी.पी शर्मा व संस्थान से डॉ. संजय अग्रवाल, डॉ. मनीष भार्गव, डॉ. प्रमोद कुमार पुरोहित, प्रो.एम.ए.रिज़वी के साथ विभिन्न उद्योगों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

प्रकृति से उतना ही लो जितना आवश्यक हो: डॉ. शिवकुमार शर्मा

"देने वाला ही देवता होता है", "प्रकृति से उतना ही लो जितना आवश्यक हो", "प्रकृति के साथ मनोवैज्ञानिक जुड़ाव ही भारतीय संस्कृति है" उक्त विचार डॉ. शिव कुमार शर्मा, राष्ट्रीय संगठन सचिव, विज्ञान भारती ने संस्थान में शासकीय गृह विज्ञान एवं महिला विज्ञान महाविद्यालय, की छात्राओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। यह सभी छात्राएं 05 दिवसीय उच्च स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने संस्थान में उपस्थित थी। डॉ. शर्मा ने कहा कि "शक्ति के बिना शिव भी शव है", जीवन जीने का तरीका जीवन की दृष्टि से जुड़ा होना चाहिए। इस अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय संस्कृति को आज पूरा विश्व अपना रहा है। महिलाएं ही संस्कृति की वास्तविक वाहक होती है, समाज में उनका योगदान सीमित नहीं होता, बल्कि वे समाज की रीढ़ होती हैं।

अधिष्ठाता विज्ञान व जनसंपर्क अधिकारी प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने समस्त मीडिया को धन्यवाद देते हुए कहा कि किसी भी संस्थान को समाज के साथ जोड़ने में आज मीडिया की भूमिका अहम है। हमे समस्त प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया का सहयोग हमेशा मिलता रहा है। इसी के फलस्वरूप संस्थान ने अभिनव प्रयोग करते हुए गत 3 वर्षों में विभिन्न राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों के संकलन को "संवाद सरिता" पुस्तक के रूप में 05 संस्करणों में प्रकाशित किया है, जिसका विमोचन उपस्थित अतिथियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संकाय सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती बबली चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

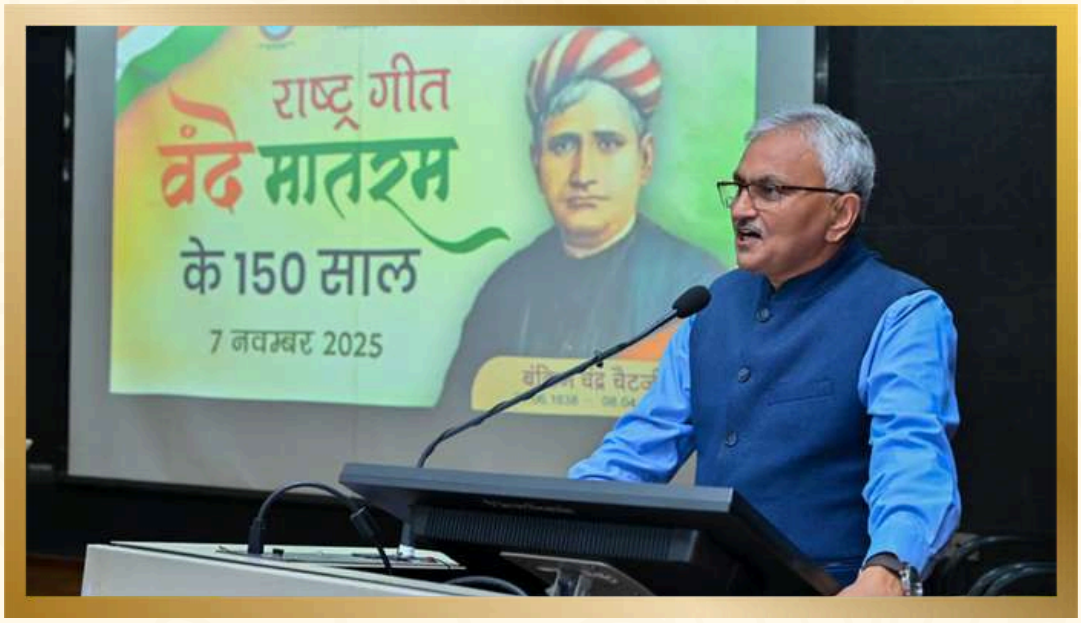

'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित कार्यक्रम

"वंदे मातरम्" ने भारत को जोड़ा और राष्ट्रभाव को प्रज्वलित रखा
— प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी

संस्थान में राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" की रचना के 150 वर्ष पूरे होने पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह गीत केवल एक गीत नहीं है, बल्कि यह भारत की आत्मा, इसके गौरव, और स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा का प्रतीक है, जिसे बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने 1875 में लिखा था। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों और कर्मियों को इस गीत के ऐतिहासिक महत्व और इसके माध्यम से देशप्रेम की भावना को सशक्त करने का संदेश देते हुए कहा कि "वंदे मातरम्" यह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक मंत्र है, एक अद्वितीय ऊर्जा है, एक संकल्प है, और राष्ट्र के प्रति गहरी निष्ठा का प्रतीक है। यह शब्द हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई, हमारे इतिहास, हमारी संस्कृति और हमारी आत्मा से गहरे जुड़े हुए हैं। आप सभी को वन्देमातरम के 150 गौरवशाली वर्षों के इस ऐतिहासिक अवसर पर हार्दिक बधाई। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने एक स्वर में "वंदे मातरम्" का सामूहिक गान कर माँ भारती को नमन किया।

उच्च शिक्षा विभाग के संकाय सदस्यों के लिए सेमीकंडक्टर तकनीक और आईपीआर पर उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान में मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के संकाय सदस्यों के लिए सेमीकंडक्टर साइंस एंड टेक्नोलॉजी एवं इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स (आईपीआर) विषय पर 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिससे इस क्षेत्र के बारे में शिक्षक और उनके माध्यम से विद्यार्थियों को भी इस इमर्जिंग एरिया के बारे में जानकारी मिल सके। संस्थान के निदेशक प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी के अनुसार आज दुनिया सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में भारत की और देख रही है। हमारे शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे इस क्षेत्र में शोध एवं नवाचार के माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करें, ताकि वे सेमीकंडक्टर उद्योग में एक सफल करियर की दिशा में आगे बढ़ सकें। प्रशिक्षित शिक्षक ना केवल पाठ्यक्रम को उद्योग के अनुरूप बना सकते हैं, बल्कि विद्यार्थियों को सेमीकंडक्टर आधारित प्रोजेक्ट्स, इंटर्नशिप और करियर विकल्पों के लिए सही दिशा भी दिखा सकते हैं। प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित, डीन (कॉर्पोरेट एवं इंटरनेशनल रिलेशंस) एवं समन्वयक मध्य प्रदेश ने कहा कि संस्थान द्वारा उच्च शिक्षा विभाग के शिक्षकों के लिए हमारा संस्थान इस वर्ष 75 प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की थी जिनमें से 51 कार्यक्रमों के माध्यम से 1800 से अधिक शिक्षकों एवं 8 प्रोग्राम के माध्यम से 250 स्टूडेंट्स को इमर्जिंग एरिया में प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स (आईपीआर) पर प्रशिक्षण का एक विशेष उद्देश्य है, जो शिक्षकों को मौलिकता, कॉपीराइट, पेटेंट, ट्रेडमार्क, इंडस्ट्रियल डिज़ाइन, जीआई टैग, ट्रेड सीक्रेट और प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहराई से जानकारी प्रदान करना था। इस प्रशिक्षण में यह बताया गया कि कैसे शैक्षिक सामग्री की सुरक्षा, दूसरों की सामग्री का सही उपयोग, और ऑनलाइन प्लेटफार्म पर कॉपीराइट नियमों का पालन किया जा सकता है। इसके अलावा, शिक्षक प्लेगरिज़म से बचने और विद्यार्थियों को सही संदर्भ देने में भी सक्षम होंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि शिक्षक जब अनुसंधान करते हैं, प्रोजेक्ट बनाते हैं, या नया विचार विकसित करते हैं, तो आईपीआर नियमों की समझ के साथ उनका नवाचार पूरी तरह से संरक्षित रहे। पेटेंट और कॉपीराइट के अधिकार शिक्षकों के अनुसंधान कार्यों को कानूनी सुरक्षा प्रदान करते हैं, जिससे उनके विचारों और रचनाओं की रक्षा होती है। आईपीआर नियमों की सही समझ शिक्षकों को अनजाने में किसी सामग्री का गलत उपयोग करने से बचाती है और वे अपने शोध कार्य में पूरी तरह से स्वतंत्र और सुरक्षित रहते हैं।

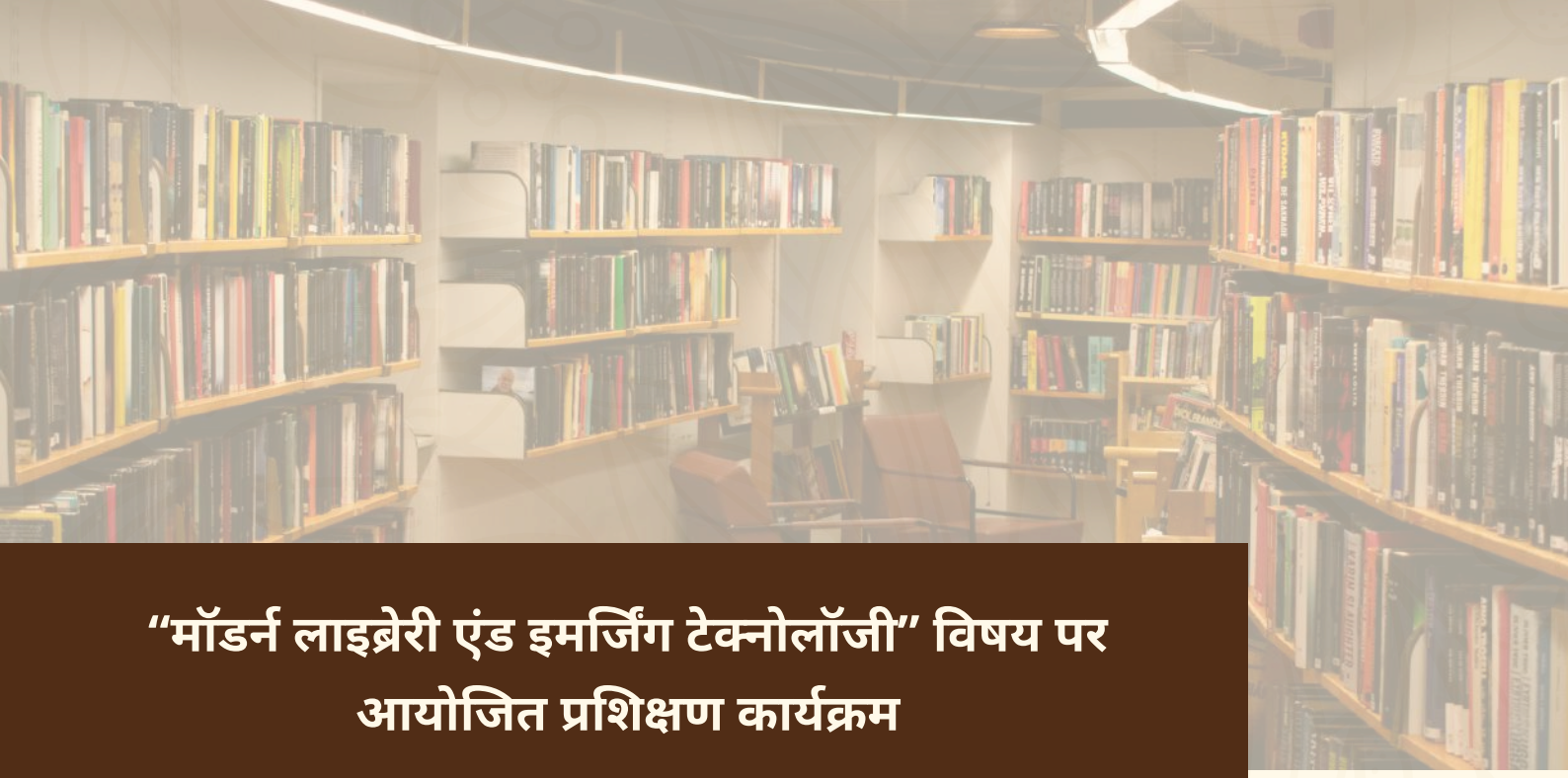

“मॉडर्न लाइब्रेरी एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी” विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के पुस्तकालय में दिनांक 15 से 19 दिसंबर 2025 तक “मॉडर्न लाइब्रेरी एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 39 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य लाइब्रेरियनों को न केवल अपनी पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करना था, बल्कि उन्हें आधुनिक पुस्तकालय सेवाओं और नई प्रौद्योगिकियों के बारे में गहरी समझ भी प्रदान करना था। इस कार्यक्रम के दौरान, भागीदारों को भोपाल स्थित विभिन्न आधुनिक पुस्तकालयों का भ्रमण करने का अवसर मिला, जहां उन्हें यह जानने का मौका मिला कि किस तरह से नई तकनीकों के माध्यम से पुस्तकालय सेवाएं संचालित की जा रही हैं। इसके साथ ही, प्रशिक्षण में सर्विस-ओरिएंटेड अप्रोच, आउटकम-बेस्ड सर्विस (OBS), और ब्लेंडेड सर्विस जैसे नए और प्रभावी तरीकों की जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक श्री महादेव सवादत्ति थे व सह-समन्वयक श्री संजय त्रिपाठी थे।

राजभाषा गतिविधियां

"राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं अनुपालन सम्बन्धी" विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिंदी केवल भाषा नहीं, एक सशक्त सांस्कृतिक धरोहर है: प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी

संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा "राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं अनुपालन सम्बन्धी" विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक व नराकास के अध्यक्ष प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी बड़े उद्देश्य को हासिल करने के लिए एकजुटता और संवाद जरूरी है, और इसमें भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी आज वैश्विक भाषा बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। मनुष्य के विकास की नींव उसकी मातृभाषा में ही होती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में लोगो को जोड़ने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान रहा है। संस्थान का राजभाषा प्रकोष्ठ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सतत प्रयत्नशील है, जिसके परिणामस्वरूप संस्थान को गत 02 वर्षों में 07 पुरुस्कार विभिन्न राष्ट्रीय मंचो से प्राप्त किये है। विषय विशेषज्ञ में रूप में आइसर भोपाल के राजभाषा अधिकारी श्री भारत भूषण देशमुख ने "कार्यालीन अनुवाद" पर समस्त कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बताया कि अनुवादक को शब्दों के जोड़-घटाव में स्वतंत्रता होती है, लेकिन भावनाओं का सही रूप में संरक्षण करना भी अनुवादक की जिम्मेदारी है।

उन्होंने कर्मचारियों से यह आग्रह किया कि वे हिंदी को अपने मूल कार्यों में बढ़ावा दें और अंग्रेजी को केवल अनुवाद की भाषा के रूप में उपयोग करें। अन्य विशेषज्ञ के रूप में श्री संजय त्रिपाठी, सचिव-नराकास ने "AI अनुवाद टूल्स" पर व्याख्यान दिया एवं श्रीमती बबली चतुर्वेदी ने "संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976" विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। राजभाषा समन्वयक प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित ने संस्थान की राजभाषा की उपलब्धियों का वर्णन करते हुए कहा कि आज हिंदी विश्व पटल पर अपना सिक्का जमा चुकी है। हिंदी का वैश्विक विस्तार भाषा से संस्कृति तक है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में आज हिंदी को पढ़ाया जा रहा है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हिंदी को हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना ही नहीं, बल्कि कार्यस्थल पर भी इसका अधिक से अधिक उपयोग करना आवश्यक है। कार्यशाला में संस्थान के साथ-साथ गुजरात, गोवा, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित थे।

विश्व हिंदी परिषद द्वारा संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'संपर्क सरिता' को मिला राजभाषा पुरस्कार 2025

संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'संपर्क सरिता' को विश्व हिंदी परिषद द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में राजभाषा पुरस्कार 2025 प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार पत्रिका के संपादक प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित एवं श्री संजय त्रिपाठी द्वारा ग्रहण किया गया। यह पुरस्कार संपर्क सरिता की लगातार 26 वर्षों की उत्कृष्टता और योगदान को मान्यता देते हुए, सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका की श्रेणी में प्रदान किया गया है। "संपर्क सरिता" ने अपनी शुरुआत से ही हिंदी भाषा में विज्ञान, तकनीकी और समसामयिक विषयों को सरल और प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया है। इस सम्मान के साथ-साथ, विश्व हिंदी परिषद ने प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित को हिंदी भाषा के प्रति उनके समर्पण और योगदान के लिए विशिष्ट रूप से सम्मानित किया। प्रो. पुरोहित को हिंदी में विज्ञान के लोकव्यापीकरण, राजभाषा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रभावी बनाने, और हिंदी में विज्ञान की कई पुस्तकें लिखने के लिए सराहा गया।

उनके द्वारा हिंदी भाषा में किए गए अथक प्रयासों ने उसे न केवल एक संचार माध्यम के रूप में, बल्कि एक सशक्त और ज्ञानवर्धक भाषा के रूप में स्थापित किया है।

संस्थान के निदेशक प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने इस उपलब्धि के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ के समस्त सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान एक महत्वपूर्ण उपलब्धि ही नहीं बल्कि हिंदी के प्रति हमारे समर्पण एवं प्रतिबद्धता को प्रकट करता है। इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें कई देशों के प्रतिनिधि भी शामिल थे। कार्यक्रम के दौरान हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने के संकल्प के साथ कई महत्वपूर्ण विचार-विमर्श किए गए।

अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग

"विज्ञान उपकरणों का संचालन एवं रखरखाव" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 13 से 15 अक्टूबर 2025 तक "विज्ञान उपकरणों का संचालन एवं रखरखाव" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रयोगशाला उपकरणों के संचालन और रखरखाव (O&M) पर विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में बताया गया कि ओपरेशन्स और मेंटेनेंस (O&M) के अंतर्गत वे सभी दैनिक गतिविधियाँ आती हैं, जो उपकरणों को उनके निर्धारित कार्यों को सही ढंग से करने के लिए आवश्यक होती हैं,

बिना रखरखाव के कोई भी उपकरण अपनी उच्चतम क्षमता पर कार्य नहीं कर सकता।प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयोगशाला में आने वाली चुनौतियों और समस्याओं की पहचान करना, प्रयोगशाला में नवाचारों की आवश्यकता और महत्व को समझना, प्रयोगशाला उपकरणों के रखरखाव के लिए एक विस्तृत शेड्यूल तैयार करना, प्रयोगशाला में सुरक्षा से संबंधित पहलुओं को समझना और उनका पालन करना आदि पर विस्तृत चर्चा की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

“डिज़ाइन ऑफ़ वर्चुअल लैब एक्सपेरिमेंट्स इन अप्लाईड साइंस” पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के अनुप्रयुक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 27 से 31 अक्टूबर 2025 तक "डिज़ाइन ऑफ़ वर्चुअल लैब एक्सपेरिमेंट्स इन अप्लाईड साइंस" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इंजीनियरिंग डिग्री/डिप्लोमा कार्यक्रमों के विद्यार्थियों को विभिन्न सिमुलेशन सॉफ़्टवेयर और वर्चुअल लैब प्रयोगों को चलाने में कुशल होना आवश्यक है। जिनका उपयोग प्रयोगों को डिज़ाइन करने में किया जा सकता है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से वर्चुअल लैब प्रयोगों के डिज़ाइन पर केंद्रित था, जिसे पाठ्यक्रम में आउटकम-बेस्ड दृष्टिकोण से जोड़ा गया। इसमें प्रतिभागियों को सिखाया गया

आज के समय में सिमुलेशन सॉफ़्टवेयर का उपयोग इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। कि कैसे SCILAB मॉडल आधारित डिज़ाइन (MBD) टूल्स का उपयोग कर सिमुलेशन प्रयोग तैयार किए जा सकते हैं,साथ ही OER’s और माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल का उपयोग करके वर्चुअल लैब प्रयोगों को डिज़ाइन किया जा सकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

"इंजीनियरिंग अनुप्रयोगों के लिए विज्ञान" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

यह कार्यक्रम विशेष रूप से विज्ञान के अनुप्रयोगों को इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समझने पर केंद्रित था तथा कैसे विज्ञान के सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की समस्याओं में लागू किया जा सकता है इस पर विस्तृत चर्चा की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

यह कार्यक्रम विशेष रूप से विज्ञान के अनुप्रयोगों को इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में समझने पर केंद्रित था तथा कैसे विज्ञान के सिद्धांतों को वास्तविक जीवन की समस्याओं में लागू किया जा सकता है इस पर विस्तृत चर्चा की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. हुसैन जीवाखान थे व संकाय सदस्य के रूप में प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित व प्रो बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग

नेक्स्ट जन AI और LLMs: ट्रांसफॉर्मिंग पेडागोजी एंड रिसर्च विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 10 से 15 नवम्बर 2025 तक विषय "नेक्स्ट जन AI और LLMs: ट्रांसफॉर्मिंग पेडागोजी एंड रिसर्च" पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 231 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था शिक्षकों को "Next Gen AI" और "LLMs" (लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स) का उपयोग करके पेडागोगी और शोध में बदलाव लाने में सक्षम बनाना। इस के अतिरिक्त, इस FDP (फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम) के माध्यम से मल्टी-मोडल जनरेटिव AI के शिक्षण और अध्ययन में उपयोग को भी समझने और इसके प्रभावों की पहचान करने पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के दौरान 13 सत्रों में कई महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई।

"AI का अवलोकन", "जनरेटिव AI की बुनियादी जानकारी", "Next Gen AI", "Next Gen AI Paradigms", "Natural Language Processing", "Large Language Models", "Multi-modal Generative AI", "पेडागोगी और इसका परिवर्तन", "Next Gen AI और LLMs का व्यक्तिगत शिक्षा में उपयोग", "Next Gen AI और LLMs का मूल्यांकन और फीडबैक में योगदान", "Next Gen AI और LLMs का शोध में उपयोग", "Next Gen AI और LLMs के प्रभाव", और "Next Gen AI और LLMs का पेडागोगिकल ट्रांसफॉर्मेशन" जैसे विषय शामिल थे। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. गणपति एस थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. संजय अग्रवाल ने योगदान दिया।

इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II आयोजित

संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 08 से 19 दिसम्बर 2025 तक "इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II" आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हाल के वर्षों में तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के राष्ट्रीय एजेंडे के अनुरूप, शिक्षण पेशेवरों की क्षमताओं में विकास करना था।

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए पुनःडिज़ाइन किया गया था, जो शिक्षकों को नवीन शिक्षाशास्त्रीय कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. आर. के. कपूर थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सीमा वर्मा, डॉ. रवि कुमार गुप्ता, डॉ. हुसैन जीवा खान, डॉ. अंजना तिवारी व डॉ. बशीरुल्ला शेख ने योगदान दिया।

पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग

"परिणाम-आधारित मूल्यांकन और प्रश्न पत्र डिजाइन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 06 से 10 अक्टूबर 2025 तक "परिणाम-आधारित मूल्यांकन और प्रश्न पत्र डिजाइन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण और मूल्यांकन के क्षेत्र में नवीनतम पद्धतियों और दृष्टिकोणों को साझा करना था, विशेषज्ञता प्राप्त हो सके। इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को यह मार्गदर्शन प्रदान किया गया कि वे परीक्षा के प्रश्नों को इस प्रकार डिज़ाइन करें, जो विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं और ज्ञान का सटीक और समग्र मूल्यांकन कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. जे. पी. टेगर ने योगदान दिया।

"एनईपी-2020 के अनुसार परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन और विकास" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 22 से 23 दिसंबर 2025 तक बिहार इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय, पटना में "एनईपी-2020 के अनुसार परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन और विकास" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 106 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) के तहत परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन की प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करना था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों को परिणाम आधारित पाठ्यक्रमों के सैद्धांतिक और प्रायोगिक दृष्टिकोण से अवगत कराया गया। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रोली प्रधान ने योगदान दिया।

"परिणाम-आधारित मूल्यांकन" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 10 से 14 नवम्बर 2025 तक विस्तार केंद्र अहमदाबाद में "परिणाम आधारित मूल्यांकन" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य परिणाम-आधारित मूल्यांकन की अवधारणाओं और विधियों को सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना था, ताकि प्रतिभागी मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सटीक, पारदर्शी और विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं का सही मूल्यांकन कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रोली प्रधान ने योगदान दिया।

इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II आयोजित

स्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा द्वारा दिनांक 10 से 21 नवम्बर 2025 तक "इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II" आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 32 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के राष्ट्रीय एजेंडे के अनुरूप, शिक्षण पेशेवरों की क्षमताओं में विकास करना था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए पुनःडिज़ाइन किया गया है, जो शिक्षकों को नवीन शिक्षाशास्त्रीय कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। कार्यक्रम के अंत में माइक्रो-टीचिंग प्रैक्टिस सत्र का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को व्यावहारिक अभ्यास का अवसर मिला। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. डॉ. वंदना सोमकुवर, डॉ. रोली प्रधान, व डॉ. एम. ऐ. रिज़वी ने योगदान दिया।

एम.एस.बी.ऐ.ई. प्रोजेक्ट कार्यशाला आयोजित

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 28 से 29 नवम्बर 2025 तक महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ़ आर्ट एजुकेशन (एम.एस.ऐ.ई.) के संयुक्त तत्वाधान में कार्यशाला का आयोजन नागपुर एवं मुंबई में किया गया। इन कार्यशालाओं में विभिन्न संस्थानों से 217 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य के विभिन्न कला पाठ्यक्रमों के लिए एक समग्र और उन्नत करिकुलम तैयार करना था, जो एनईपी-2020 और एनसीआरएफ 2023 की गाइडलाइंस के अनुरूप हो। इस कार्यक्रम में विभिन्न डिप्लोमा प्रोग्राम्स जैसे कि फाउंडेशन, डिप्लोमा ड्राइंग एंड प्लानिंग, डिप्लोमा एप्लाइड आर्ट, स्कल्पचर एंड मॉडलिंग, टेक्सटाइल डिज़ाइन, इंटीरियर्स डेकोरेशन, और मेटल वर्क आदि के लिए पाठ्यक्रम विकास की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।कार्यशाला मेंनागपुर एवं मुंबई में स्थित 163 और 54 आर्ट महाविद्यालयों के शिक्षकों को करिकुलम के पुनरावलोकन और सुधार की प्रक्रिया से अवगत कराया। इस कार्यक्रम में एम.एस.ऐ.ई. के निदेशक डॉ. इंगले, सचिव श्री संदीप डोंगरे, और सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, आर्किटेक्चर की चीफ को-ऑर्डिनेटर श्रीमती स्मिता किंकाले उपस्थित थीं। इस कार्यशाला के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे।

“परिणाम आधारित शिक्षा एवं पाठ्यक्रम" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 10 से 14 नवम्बर 2025 तक विस्तार केंद्र अहमदाबाद में "परिणाम आधारित मूल्यांकन” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य परिणाम-आधारित मूल्यांकन की अवधारणाओं और विधियों को सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना था, ताकि प्रतिभागी मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक सटीक, पारदर्शी और विद्यार्थियों की वास्तविक क्षमताओं का सही मूल्यांकन कर सकें। इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. अंजू रौले थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रोली प्रधान ने योगदान दिया।

"इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में मूल्यांकन एवं मूल्यांकन तकनीकें" पर आयोजित कार्यक्रम

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में प्रभावी मूल्यांकन और मूल्यांकन तकनीकों के संबंध में ज्ञान और कौशल का विकास करना था, ताकि शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार किया जा सके और विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को अधिक सशक्त बनाया जा सके। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. जे. पी. टेगर थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अंजू रावले ने योगदान दिया।

संस्थान के पाठ्यक्रम विकास एवं मूल्यांकन शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 15 से 19 दिसंबर 2025 तक "इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों में मूल्यांकन एवं मूल्यांकन तकनीकें" विषय पर पांच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 51 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 आयोजित

संस्थान में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 मनाया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना था। सतर्कता जागरूकता मुख्यालय द्वारा इस वर्ष की थीम "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" थी, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों को भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरूक करना और उन्हें इस दिशा में ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करना था। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत संस्थान में कई कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत 27 अक्टूबर 2025 को राजीव गांधी सभागार में सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा समारोह से हुई। इस आयोजन में सभी उपस्थित लोगों ने नैतिक आचरण और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों के प्रति अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता व्यक्त की। शपथ के पश्चात सतर्कता जागरूकता पर एक इंटरएक्टिव और सूचनात्मक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई।

इसी सन्दर्भ में 06 नवम्बर 2025को संस्थान में श्री गौतम कुमार सिंह, प्रशासनिक अधिकारी ने "जागरूकता से कार्रवाई तक: जड़ों में सतर्कता को मजबूत करना" पर व्याख्यान दिया, जिसमें यह बताया गया कि कैसे नियम और विनियम नैतिक व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, पारदर्शिता को बढ़ावा देते हैं, और संस्थान में विश्वास और जिम्मेदारी की संस्कृति का निर्माण करते हैं।

21 अगस्त 2025 को "शारीरिक सुरक्षा और साइबर सुरक्षा" पर श्री प्रणय नागवंशी, पुलिस अधीक्षक (साइबर सुरक्षा), पुलिस मुख्यालय, भोपाल द्वारा एक विशेष व्याख्यान दिया गया। इस सत्र में शारीरिक और डिजिटल सुरक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया और उभरते साइबर खतरों और उनके बचाव के उपायों पर जागरूक किया गया। तत्पश्चात "कैम्पस में Wi-Fi का सुरक्षित उपयोग" पर एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। यह सत्र डॉ. रविकांत कपूर, और श्री अभय दुबे, द्वारा संचालित किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 प्रतियोगिता परिणाम

क्र.	दिनांक	प्रतियोगिता	निर्णायक	परिणाम
1	13 अक्टूबर 2025	पोस्टर प्रतियोगिता	श्रीमती सुधा मेहता	1. श्री मोहित कुमार 2. श्री गौरव कुमार 3. श्रीमती गुंजन शर्मा
2	15 अक्टूबर 2025	स्लोगन प्रतियोगिता	श्रीमती चंचल मेहरा	1. श्री कुनाल वासनिक 2. श्री गौरव कुमार 3. श्री रितेन्द्र पवार
3	17 अक्टूबर 2025	निबंध प्रतियोगिता	श्रीमती वंदना त्रिपाठी	1. श्री चंद्रभूषण सक्सेना 2. श्रीमती रचना गुप्ता 3. श्रीमती भावना मोतियानी

क्र.	सतर्कता प्रश्नोत्तरी विजेता	साइबर सुरक्षा प्रश्नोत्तरी विजेता
1	श्री मोहित राज	श्री सुनील सक्सेना
2	श्रीमती दिव्या विजय	श्रीमती शोभा लेखवानी
3	श्री रमन शिमोले	श्री नीरज
4	श्री नीगेन्द्र दास	श्री गौरव बघेल
5	श्री निलेष कुमार परते	प्रो. अस्मिता खंजाची
6	श्री कमलेश गंगवार	श्री चंद्रभूषण सक्सेना
7	श्री सुनील सक्सेना	श्री रमन शिमोले
8	श्री ए.के.ओझा	श्री धीरज पांडे
9	श्रीमती भावना मोतियानी	श्री रितेन्द्र पवार
10	श्रीमती दीपा हिमथानी	श्री राजेंद्र
11	श्री हर्ष रघुवंशी	श्रीमती रचना गुप्ता
12	श्री सुशील कुमार घरवे	श्री कमलेश गंगवार
13	श्री गौरव	सुश्री जैना
14	सुश्री निकिता ठाकुर	श्री परिवेश कस्तूरिया
15	श्री रितेन्द्र कुमार पवार	श्री कमल यादव
16	सुश्री निताषा ठाकुर	श्रीमती ज्योति वर्मा
17	सुश्री अंजलि रघुवंषी	सुश्री निधि यादव
18	श्री मेहरबान सिंह लोधी	श्रीमती भावना मोतियानी
19		श्री अमित बघेल
20		श्री पंकज प्रजापति

सर्तकता जागरूकता सप्ताह 2025

नवोत्कर्ष 2025 आयोजित

समविश्विद्यालय बनने और विद्यार्थियों के पहले बैच का स्वागत करने के बाद, संस्थान में तीन दिवसीय वार्षिक महोत्सव "नवोत्कर्ष-2025" पोस्टग्रेजुएट और पीएचडी विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया गया। इस आयोजन ने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने और खेलों और शैक्षिक क्षेत्रों में संभावनाओं की सीमाओं को बढ़ाने का अवसर प्रदान किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी ने कहा कि विद्यार्थियों की सफलता सिर्फ उनकी एकेडमिक अचीवमेंट्स से नहीं, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में संतुलन बनाए रखने और उसमें सफलता प्राप्त करने की उनकी क्षमता से भी मापी जाती है। हम विद्यार्थियों को एक ऐसा मंच प्रदान करने में खुशी हो रही है

जहाँ विद्यार्थी नई रुचियों को एक्सप्लोर कर सकें और सबसे ज़रूरी बात, अपनी कम्युनिटी से सपोर्ट महसूस कर सकें। यह आयोजन, जो अकादमिक क्षेत्र के स्टूडेंट्स को एक साथ लाने के इरादे से डिज़ाइन किया गया है, जो अलग-अलग बैकग्राउंड के स्टूडेंट्स को न सिर्फ जुड़ने के लिए एक डायनामिक स्पेस देता है, बल्कि फ्रेंडली कॉम्पिटिशन के साथ-साथ फिजिकल फिटनेस, इंटेलेक्चुअल ग्रोथ और समग्र विकास पर गहरे विचार-विमर्श का अवसर भी प्रदान करता है। नवोत्कर्ष 2025 महोत्सव केवल खेलों तक सीमित नहीं है; यह नवाचार की भावना और सहयोग की शक्ति का उत्सव है। खेल, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों के विस्तृत कार्यक्रम का यह महोत्सव समग्र शिक्षा के महत्व को उजागर करता है।

क्र.	प्रतियोगिता	निर्णायक	परिणाम (पुरुष)	परिणाम (महिला)
1	बैडमिंटन डबल्स	श्री कुणाल श्री लोकेंद्र श्री अमर	1. श्री अखिल देव व श्री पंकज 2. श्री आर्यन व श्री अरूप	1. सुश्री भारती व सुश्री संजना 2. सुश्री कशिश व सुश्री नियति
2	शतरंज	श्रीमती शोभा लेखवानी	1. श्री नितेश 2. श्री प्रांजल	1. सुश्री श्रुति 2. सुश्री भारती
3	कैरम डबल्स	श्री अंजुम अख्तर श्री कदीर	1. श्री ऋषि व श्री प्रांजल 2. श्री साईंप्रसाद व श्री अरूप	1. सुश्री भारती व सुश्री नियति 2. सुश्री अंजलि व सुश्री श्रुति
4	टेबल टेनिस	श्री संजय मिश्रा श्री एम.एस बालगंगाधर	1. श्री अखिल देव 2. श्री नितेश	-

क्र.	प्रतियोगिता	निर्णायक	परिणाम
1	कविता एवं सस्वर पाठ	श्रीमती वंदना त्रिपाठी प्रो अंजलि पोतनीस, श्री संजय शर्मा सर	1. श्री कपिल गुरबक्सानी 2. सुश्री अंजलि रघुवंशी व सुश्री सोनालिनी
2	वाद-विवाद		1. श्री प्रांजल एवं भारती की टीम
3	तात्कालिक भाषण		1. श्री कपिल गुरबक्सानी 2. सुश्री भारती सवित्री
4	प्रश्नोत्तरी		1. श्री अमन 2. सुश्री अंजलि व श्री उदय
5	गायन	डॉ. सुब्रत रॉय डॉ. सीमा वर्मा	1. श्री हर्ष रघुवंशी 2. सुश्री भारती सावित्री 3. सुश्री शभा ज़बी
6	नृत्य		1. श्री उदय देशमुख व सुश्री श्रुति 2. गर्ल्स डांस ग्रुप 3. सुश्री पिंकी व सुश्री नियति एवं बॉयज़ डांस ग्रुप

नवोत्कर्ष

नवोत्कर्ष

नवोत्कर्ष

नवोत्कर्ष
SPORTS & CULTURAL FEST OF
NITTTR BHOPAL
1 - 3 December 2025

नवोत्कर्ष

विस्तार केंद्र अहमदाबाद में आयोजित कार्यक्रम

"इंटरप्रेन्योरशिप एंड स्टार्टअप" विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 24 से 28 नवम्बर 2025 व 08 से 12 दिसंबर 2025 तक "इंटरप्रेन्योरशिप व स्टार्टअप" विषय पर भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद के सहयोग से पाँच दिवसीय दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गए। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के विभिन्न संस्थानों से 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत में उद्यमिता और स्टार्टअप को बढ़ावा देना था, खासकर उन क्षेत्रों में जहां युवा और शिक्षित जनसंख्या से नया व्यवसाय शुरू करने की अपार संभावना है।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थानों और विश्वविद्यालयों के ट्रेनिंग और प्लेसमेंट अधिकारियों को उद्यमिता की दिशा में सक्षम बनाने के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इन अधिकारियों को उद्यमिता के मूल सिद्धांतों और स्टार्टअप के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना था, ताकि वे विद्यार्थियों और अन्य युवा उद्यमियों को बेहतर मार्गदर्शन दे सकें। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे।

विजन, मिशन एंड कोर वैल्यूज विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 19 से 20 दिसम्बर 2025 तक "विजन, मिशन और वैल्यूज" विषय पर वी. पी. विज्ञान कॉलेज, अहमदाबाद में चारूत्तर विद्यामंडल विश्वविद्यालय के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को उनके संस्थान के विज़न और मिशन को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए आवश्यक कदमों से अवगत कराना था।

यह कार्यक्रम शिक्षकों को अपने कार्यक्षेत्र में कोर वैल्यूज को सही तरीके से लागू करने के तरीकों पर भी केंद्रित था, ताकि वे विद्यार्थियों को एक सशक्त और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकें और लक्ष्यों के अनुरूप संसाधनों का अधिकतम और प्रभावी उपयोग किया जा सके। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. बी. एल. गुप्ता ने योगदान दिया।

"लीडरशिप एक्सीलेंस एंड इफेक्टिव डिसीजन- मेकिंग" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद व विस्तार केंद्र पुणे द्वारा दिनांक 06 से 10 अक्टूबर 2025 तक "लीडरशिप एक्सीलेंस एंड इफेक्टिव डिसीजन-मेकिन्ग" विषय पर पुणे में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के विभिन्न संस्थानों से 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थान की रणनीतिक दिशा निर्धारित करने, नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने और निरंतर सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देना था।

कार्यक्रम में शासन और नेतृत्व के लिए नवाचार, उत्कृष्टता और संस्था निर्माण की अवधारणा और प्रक्रिया," "नीति और नेतृत्व," "नेतृत्व शैलियों में सुधार और नैतिक प्रभाव," और "प्लानिंग टूल्स एंड टाईप्स" शामिल थे। साथ ही, SWOT विश्लेषण, माइंड मैपिंग, और चार्ट के उपयोग पर विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. वी. डी. पाटिल व डॉ. निशीथ दुबे थे।

"मैथमेटिकल फाउंडेशन्स इन मशीन लर्निंग एंड डीप लर्निंग" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 10 से 14 नवम्बर 2025 तक "मैथमेटिकल फाउंडेशन्स इन मशीन लर्निंग एंड डीप लर्निंग" विषय पर लालभाई दलपतभाई कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग की तकनीकी जड़ों को समझाना और इन क्षेत्रों में रैखिक परिकल्पना, समाश्रयण, और ग्रेडिएंट अवरोहण जैसे महत्वपूर्ण गणितीय सिद्धांतों की व्याख्या करना था।

इस कार्यक्रम में लॉजिस्टिक रिग्रेशन, हाइपोथीसिस, और लॉजिस्टिक रिग्रेशन में ग्रेडिएंट डिसेंट, आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क प्रसार, AI से एजेंटिक AI: ऑटोनॉमस इंटेलिजेंस, AI और ML में गोपनीयता संरक्षण डेटा प्रसंस्करण आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व विषय विशेषज्ञ के रूप मेंलालभाई दलपतभाई कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के प्रो. पार्थ दावे व प्रो. निकुंज दोमादिया ने योगदान दिया

इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II आयोजित

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 27 अक्टूबर से 07 नवम्बर 2025 तक इंडक्शन प्रोग्राम फेज-II आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य हालिया वर्षों में तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के राष्ट्रीय एजेंडे के अनुरूप, शिक्षण पेशेवरों की क्षमताओं में विकास करना था। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की अनुशंसाओं को ध्यान में रखते हुए पुनःडिज़ाइन किया गया है, जो शिक्षकों को नवीन शिक्षाशास्त्रीय कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. निशीथ दुबे थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. रंजीत सिंह चौहान, डॉ. सी. एस. राजेश्वरी, डॉ. सुमन पटनाइक, डॉ. अजंली पोटनीस ने योगदान दिया।

नशा मुक्ति पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 06 नवम्बर 2025 को "नशा मुक्ति" कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना और नशा मुक्ति की दिशा में सकारात्मक कदम उठाना था। प्रतिभागियों ने नशे से बचने के महत्व को दर्शाते हुए पोस्टर बनाए, जो संदेश देने में अत्यंत प्रभावी रहे। इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. रंजीत सिंह चौहान थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सुमन पटनाइक ने योगदान दिया।

कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर आयोजित कार्यशाला

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा दिनांक 06 नवम्बर 2025 को कार्यालय में कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को कम्प्यूटर के विभिन्न उपयोगों पर प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला के दौरान, प्रशिक्षणार्थियों को डिजीटल फाइलों के स्थानांतरण, साझा डाटा शेयरिंग, गूगल फॉर्म क्रिएशन और अन्य तकनीकी विधाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस कार्यक्रम की समन्वयक प्रो. अजंली पोतनीस थी व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सी. एस. राजेश्वरी ने योगदान दिया।

"राष्ट्रीय एकता दिवस" पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र अहमदाबाद द्वारा 31 अक्टूबर 2025 को "राष्ट्रीय एकता दिवस" का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की भारत की आज़ादी और राष्ट्र के एकीकरण में अतुलनीय भूमिका को याद किया गया। 2014 से प्रत्येक वर्ष 31 अक्टूबर को उनके जन्मदिवस पर "राष्ट्रीय एकता दिवस" के रूप में यह दिन मनाया जाता है। प्रो रंजीत सिंह चौहान, ने उपस्थितजनों को राष्ट्र की एकता और अखंडता की शपथ दिलाई। उन्होंने सरदार पटेल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विशेष रूप से भारत के 565 देशी रियासतों के एकीकरण में उनके योगदान को बताया। सरदार पटेल के जीवन पर आधारित एक शॉर्ट मूवी का प्रदर्शन किया, जिससे सभी को उनके संघर्ष और समर्पण की झलक मिली।

बिल्डिंग टुमॉरोज़ लीडर्स

विकसित भारत@2047 विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 03 से 07 नवम्बर 2025 तक "बिल्डिंग टुमॉरोज़ लीडर्स: विकसित भारत@2047" विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में उसकी यात्रा को प्रभावी रूप से रेखांकित करना, साथ ही इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी क्षेत्रों, विशेष रूप से शिक्षा क्षेत्र में सामूहिक और सतत प्रयासों की आवश्यकता पर बल देना था। पाठ्यक्रम में राष्ट्र निर्माण हेतु नेतृत्व, नेतृत्व क्षमता की पहचान और संवर्धन, अनुभवात्मक अधिगम, उद्यमशील सोच, नवाचार, समावेशी नेतृत्व, टीम निर्माण, संघर्ष समाधान और हितधारक सहभागिता जैसे महत्वपूर्ण विषयों को शामिल किया गया। प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत विज़न स्टेटमेंट्स को विकसित भारत@2047 के लक्ष्यों के अनुरूप होने के कारण सराहना प्राप्त हुई।

यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप रहा, जो छात्र-केंद्रित और अनुभवात्मक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है। कुल मिलाकर, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को विद्यार्थियों में नेतृत्व, नवाचार और राष्ट्र निर्माण के मूल्यों को विकसित करने के लिए सक्षम बनाया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. आशीष देशपांडे ने योगदान दिया।प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी शिक्षकों की उस महत्वपूर्ण भूमिका को विशेष रूप से उजागर किया गया, जिसके माध्यम से वे आने वाली पीढ़ी की मानसिकता, कौशल और नेतृत्व गुणों का निर्माण करते हैं। प्रतिभागियों को राष्ट्र निर्माण, नवाचार, उद्यमिता और सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए आवश्यक नेतृत्व के मूल सिद्धांतों से परिचित कराया गया। कार्यक्रम में सहभागात्मक शिक्षण विधियों का प्रयोग किया गया, जैसे इनपुट-कम-चर्चा, केस स्टडी, अभ्यास, अनुभव साझा करना, आत्म-विश्लेषण और प्रस्तुतियाँ, ताकि प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

संकाय के औद्योगिक प्रशिक्षण पर आयोजित ओरिएंटेशन कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 17 से 21 नवम्बर 2025 तक संकाय के औद्योगिक प्रशिक्षण हेतु पाँच दिवसीय ऑनलाइन ओरिएंटेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 57 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को नए दृष्टिकोण प्राप्त करने, अकादमिक समझ को गहरा करने और आधुनिक शिक्षा की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को पुनः समायोजित करने में सहायता प्रदान करना था। यह ओरिएंटेशन कार्यक्रम विशेष रूप से उभरती हुई तकनीकों और आज के विद्यार्थियों की बदलती मानसिकता पर केंद्रित था। इस कार्यक्रम ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों और आधुनिक, तकनीक-आधारित शिक्षण वातावरण के बीच की दूरी को प्रभावी रूप से कम किया।

कार्यक्रम में उद्योग विशेषज्ञों ने इंडस्ट्री 1.0 से इंडस्ट्री 4.0 तक के महत्वपूर्ण पहलुओं पर मूल्यवान जानकारियाँ साझा कीं गई जिससे यह स्पष्ट हुआ कि तकनीकी प्रगति किस प्रकार शिक्षा, औद्योगिक प्रक्रियाओं और फैकल्टी की भूमिकाओं को नया स्वरूप दे रही है। उनके व्यावहारिक सुझावों ने प्रतिभागियों को यह समझने में सहायता दी कि तकनीक शिक्षण विधियों, अनुसंधान, सहयोग और दीर्घकालिक व्यावसायिक विकास में कैसे सहायक हो सकती है। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे।

व्यावसायिक नैतिकता एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्य विषय पर आयोजित कार्यक्रम

संस्थान के विस्तार केंद्र गोवा द्वारा दिनांक 08 से 12 दिसम्बर 2025 तक "पेशेवर नैतिकता एवं सार्वभौमिक मानवीय मूल्य" विषय पर पाँच दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों से 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक नैतिकता (प्रोफेशनल एथिक्स), सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों और मन-शरीर तंत्र की संरचित और व्यावहारिक समझ प्रदान करना था, जो प्रायः पारंपरिक पाठ्यक्रमों में उपेक्षित रहती है। आत्म-अन्वेषण सत्रों और व्यक्तिगत मूल्य-मानचित्रण जैसी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों ने अपने मूल्यों और मानवीय आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता विकसित की। व्यक्तिगत और पारस्परिक स्तर पर सामंजस्य स्थापित करने पर आधारित सत्रों में विचार, व्यवहार और कार्य में संतुलन, विश्वास, सम्मान, सहानुभूति, प्रभावी संचार और संघर्ष समाधान पर चर्चा की गई जिसमें प्रोफेशनल एथिक्स के मूल तत्वों जैसे नैतिक दायित्व, आचार संहिता और कार्यस्थल की दुविधाएँ शामिल थीं। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. ऐलन संजय रोचा थे व संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अस्मिता खजांची ने योगदान दिया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षों की सेवा यात्रा पर विशेष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: एक संगठन, एक उद्देश्य, एक राष्ट्र

प्रो. चन्द्र चारू त्रिपाठी

आज जब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सौ वर्षों की यात्रा पर कुछ लिखने का सोचा तो इन वर्षों की संघ की अनंत सेवाएं स्मृति पटल पर अंकित हो गयी। संघ की यात्रा को चंद पेजों या पुस्तक में नहीं समेटा जा सकता उस अथाह समुद्र को सिर्फ दिल की गहराइयों से महसूस किया जा सकता हे।आरएसएस की यात्रा एक छोटे से पौधे से एक विशाल वट वृक्ष बनने तक की कहानी है, जो संगठन की दृढ़ता, समर्पण, और राष्ट्रीय सेवा के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इन सो वर्षों की अपनी यात्रा में आरएसएस ने कोविड जैसी महामारी हो या किसी भी प्रकार की आपदा स्वयंसेवक सबसे अग्रणी पंक्ति में खड़े होकर पीड़ित मानवता का सहारा बने हैं।

आरएसएस के प्रारंभिक वर्ष: संघर्ष और विकास की यात्रा: विजयादशमी, 27 सितंबर 1925 - नागपुर के एक छोटे से मैदान पर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने मात्र पांच बालकों के साथ एक ऐतिहासिक शाखा प्रारंभ की। डॉ. केशव बलिराम ने कलकत्ता के नेशनल मेडिकल कॉलेज से चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त की और 1910 में उन्होंने "स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करें, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करें" का नारा दिया।

उन्हें यह अनुभव हुआ कि केवल राजनीतिक आंदोलन से राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता। उस दिन किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि यह छोटी सी शुरुआत एक दिन विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन में परिवर्तित हो जाएगी। आज लगभग 70,000 से अधिक दैनिक शाखाओं के साथ संघ 60 देशों में सक्रिय है। डॉ. हेडगेवार ने तत्कालीन साम्प्रदायिक दंगों में हिंदुओं की दुर्दशा को देखते हुए कहा था की "हिंदू समाज को संगठित करना होगा, उनमें शक्ति और आत्मबल का संचार करना होगा। यह कार्य पीढ़ियों का है, लेकिन हमें आज से ही प्रारंभ करना होगा।" 1926 में नागपुर में शाखाओं की संख्या 12 हो गई, पहला गणवेश खाकी निकर और सफेद कमीज को लिया एवं 1929 मे भगवा ध्वज को संघ का प्रतीक चिह्न स्वीकार किया गया। 1931 मे पहला संघ शिक्षा वर्ग (प्रशिक्षण शिविर) नागपुर में आयोजित हुआ। 1935 मे संघ महाराष्ट्र के बाहर उत्तर प्रदेश, बिहार और पंजाब तक विस्तारित हुआ । मधुकर दत्तात्रेय देवरस (भाऊ साहब) 1926 में संघ से जुड़े और जीवनपर्यंत समर्पित रहे। वे 1973 से 1994 तक सरसंघचालक रहे।

उनके बाद गुरुजी गोलवलकर का युग (1940-1973) तक रहा। माधव सदाशिव गोलवलकर (1906-1973), जिन्हें 'गुरुजी' के नाम से जाना जाता है, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के प्राध्यापक थे। 1933 में संघ से जुड़े और 1940 में डॉ. हेडगेवार के निधन के बाद सरसंघचालक बने। गुरुजी की पुस्तक "वी ऑर अवर नेशनहुड डिफाइंड" (1939) और "बंच ऑफ थॉट्स" संघ की वैचारिक नींव बनीं।

1973 में बालसाहब देवरस तीसरे सरसंघचालक बने 1994 में प्रो. राजेंद्र सिंह (राज्जू भैया) 4वें सरसंघचालक बने। वर्ष 2000 में के. एस. सुदर्शन 5वें सरसंघचालक बने। वर्ष 2009 में श्री मोहन भागवत 6वें सरसंघचालक बने जो वर्तमान में अपना दायित्व निभा रहे हैं। ।

स्वतंत्रता आंदोलन में संघ का योगदान: यद्यपि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने संगठन के रूप में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग नहीं लिया, लेकिन अनेक स्वयंसेवकों ने व्यक्तिगत स्तर पर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन और अन्य आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। विभाजन के समय संघ ने शरणार्थियों की सेवा कर अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया, जिसे सरदार पटेल ने भी सराहा। गांधीजी की हत्या के बाद 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगा, जो 1949 में हटा लिया गया। इसके बाद संघ के विचारों से प्रेरित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 1951 में जनसंघ की स्थापना की, जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी जैसे नेता जुड़े। आपातकाल (1975) के दौरान संघ कार्यकर्ताओं ने भारी संघर्ष किया और 1977 में जनता पार्टी की जीत में अप्रत्यक्ष भूमिका निभाई। 1980 में भाजपा की स्थापना के साथ संघ का राजनीतिक प्रभाव और स्पष्ट हुआ, जो आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे पूर्व प्रचारक के नेतृत्व में दिखाई देता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की सामाजिक सेवा यात्रा शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा और राष्ट्र निर्माण के विविध क्षेत्रों में फैली हुई है। संघ परिवार में भाजपा, भारतीय मजदूर संघ, किसान संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद,विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्र सेविका समिति सहित कई संगठन कार्यरत हैं, जिनका उद्देश्य सेवा, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रहित है। संघ की यात्रा में विकास, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण, और राष्ट्रीय एकता जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं में प्रत्येक स्वयंसेवक ने अपना योगदान दिया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठनात्मक रणनीति एवं विकास प्रक्रिया: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की संगठनात्मक कार्यविधि शाखा प्रणाली, स्तरीय संरचना, प्रशिक्षण शिविरों और प्रचारक व्यवस्था पर आधारित है। शाखा इसकी मूल इकाई है, जहां स्वयंसेवकों का शारीरिक, बौद्धिक और चारित्रिक विकास होता है। संगठन पिरामिडीय ढांचे में नगर, जिला, विभाग, प्रांत और अखिल भारतीय स्तर तक फैला है। नए कार्यकर्ताओं का निर्माण संवाद, प्रशिक्षण और विचारात्मक वर्गों के माध्यम से होता है।

प्रचारक पूर्णकालिक कार्यकर्ता होते हैं जो संगठन विस्तार में समर्पित रहते हैं। आरएसएस सामाजिक समरसता, सेवा कार्य और भौगोलिक विस्तार की रणनीति अपनाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है। इसका निर्णय तंत्र सामूहिक सहमति पर आधारित होता है और अनुशासन, सेवा भाव तथा राष्ट्रभक्ति इसके मूल मूल्य हैं। संघ परिवार के अंतर्गत कई संगठनों का विकास हुआ है, जिससे यह संगठन भारतीय सामाजिक जीवन का एक सशक्त आधार बन चुका है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शैक्षिक पहल - विद्या भारती का उद्भव और विकास: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) और विद्याभारती के बीच संबंध वैचारिक, संगठनात्मक और व्यावहारिक स्तर पर गहरा है। 1925 में स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जबकि 1977 में स्थापित विद्याभारती शिक्षा के माध्यम से इन्हीं मूल्यों को आगे बढ़ाती है। दोनों संगठन भारतीय संस्कृति, राष्ट्रवाद और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के पक्षधर हैं। संघ के स्वयंसेवक विद्याभारती के स्कूलों के संचालन, शिक्षक प्रशिक्षण और छात्र गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यद्यपि विद्याभारती एक स्वतंत्र शैक्षिक संस्था है, वह संघ से वैचारिक प्रेरणा लेकर शिक्षा में गुणवत्ता, समावेशिता और राष्ट्र निर्माण पर बल देती है।

विद्या भारती का कार्य देश के कुल 776 जिलों में से 668 जिलों में सुचारू रूप से चल रहा है। विद्या भारती इन जिलों में 21494 औपचारिक विद्यालय एवं 9336 संस्कार केंद्रों में माध्यम से राष्ट्र के संस्कार युक्त शिक्षा प्रदान करने एवं विद्यार्थियों के सर्वणों विकास में लगा हुआ हैं। इन विद्यालयों में 144425 शिक्षक एवं 3298925 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्या भारती के अनौपचारिक शिक्षण संस्थानों में जहां सरकारी संसाधन की उपलब्धता एवं छोटे दूरवर्ती क्षेत्र के स्थानों में 234997 से ज्यादा संख्या में बालक संस्कार एवं प्राथमिक स्तर की शिक्षा ले रहे हैं। विद्या भारती का लक्ष्य है कि 2027 तक 40 लाख विद्यार्थियों को प्रति वर्ष शिक्षा प्रदान करना एवं राष्ट्र के लिए राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण करना है।

सेवा भारती 500 से अधिक चिकित्सालयों, हॉस्टलों और प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से समाज सेवा कर रही है। वनवासी कल्याण आश्रम 7,000 प्रकल्पों द्वारा 50,000 विद्यार्थियों को हॉस्टल सुविधा दे रहा है। इस संबंध को लेकर इसे भारतीय मूल्यों के संवाहक के रूप में देखा जाता है।

आरएसएस स्वयं सेवकों ने समय समय पर युद्ध सुनामी,गौ-संरक्षण ,कोविड-19 राहत कार्य ,राम जन्मभूमि आंदोलन में महती भूमिका निभाई हे।

2025 में आरएसएस का शताब्दी वर्ष सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण, आत्मनिर्भरता और पारिवारिक मूल्यों पर देशव्यापी अभियान के साथ शुरू किया गया। जो निसंदेह भारत के विकसित भारत बनने की दिशा में मील का पथ्थर साबित होगा

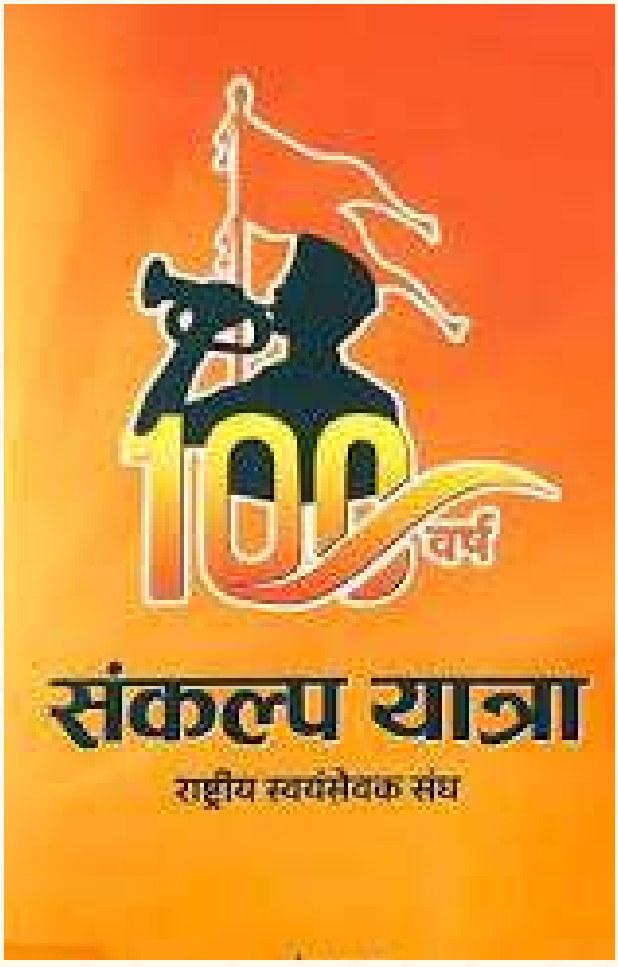

भारत सेमीकंडक्टर यात्रा : चिप से चैंपियन तक

प्रो. प्रमोद कुमार पुरोहित

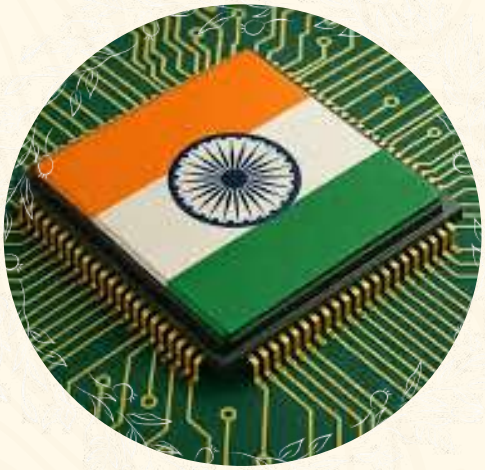

नई दिल्ली स्थित यशोभूमि में भारत के सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को गति प्रदान करने के उद्देश्य से आयोजित 'सेमीकॉन इंडिया-2025' के उद्घाटन अवसर पर दुनिया भर के 40 से 50 देशों के सेमीकंडक्टर क्षेत्र के विशेषज्ञों की उपस्थिति को देखते हुए, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि भारत की नवाचार और युवा शक्ति भी इस कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से उपस्थित है। उन्होंने कहा कि यह अनूठा संयोजन एक स्पष्ट संदेश देता है कि दुनिया भारत पर भरोसा करती है, दुनिया भारत में विश्वास करती है और दुनिया भारत के साथ सेमीकंडक्टर का भविष्य बनाने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री ने सेमीकॉन इंडिया में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि वे एक विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनने की दिशा में भारत की यात्रा में महत्वपूर्ण भागीदार हैं। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन हर भारतीय को गर्व से भर देता है। सेमीकॉन इंडिया 2025 में सारे विश्व से 20,000 प्रतिभागियों की उपस्थिति में सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग की नवीनतम प्रगति, अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा का सबसे बड़ा मंच बना। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने माननीय प्रधानमंत्री को इसरो की सेमीकंडक्टर लैब में विकसित भारत की पहली स्वदेशी चिप 'विक्रम 32' औपचारिक रूप से भेंट की।

यह ऐतिहासिक उपलब्धि देश की आत्मनिर्भरता और अत्याधुनिक तकनीकी क्षमता की दिशा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि "वह दिन दूर नहीं जब भारत की सबसे छोटी चिप दुनिया में सबसे बड़ा बदलाव लाएगी। सेमीकंडक्टर की दुनिया में अक्सर कहा जाता है कि 'तेल काला सोना था, लेकिन चिप्स डिजिटल हीरे हैं। भारत का दृष्टिकोण एक दूरदर्शी रणनीति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य भारत को इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति बनाना है।

माइक्रोचिप, जो अक्सर नाखून से भी छोटी होती है, डिजिटल युग में साधारण गैजेट्स से लेकर उन्नत सुपर कंप्यूटर में उपयोग होती है। इस चिप के बिना आज किसी भी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की कल्पना भी संभव नहीं है।

एक सेमी-कंडक्टर चिप का कांसेप्ट से लेकर सभी लेटेस्ट टेक्नोलॉजी में मुख्य कॉम्पोनेन्ट बनने तक की यात्रा नवाचार, आविष्कार और वैश्विक प्रभाव की कहानी है। पहली सेमीकंडक्टर चिप का श्रेय टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स के जैक किल्बी को जाता है, जिन्होंने 1958 में जर्मेनियम का उपयोग करके दुनिया का पहला इंटीग्रेटेड सर्किट (आईसी) बनाया था। इसके कुछ महीने बाद,1959 में फेयरचाइल्ड सेमीकंडक्टर के रॉबर्ट नॉयस ने सिलिकॉन का उपयोग करके इसका एक अधिक व्यावहारिक संस्करण बनाया,

भारत में सेमीकंडक्टर उद्योग की नींव 1960–70 के दशक में रखी गई। शुरुआती प्रयासों में चंडीगढ़ में सेमीकंडक्टर कॉम्प्लेक्स लिमिटेड (SCL) की स्थापना की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य देश की रक्षा और अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए चिप्स का निर्माण था। इसी दौर में इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (ECIL) जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों ने भी सेमीकंडक्टर उपकरणों के निर्माण और अनुसंधान में अहम योगदान दिया।

उस समय भारत में पर्याप्त तकनीकी विशेषज्ञता, पूँजी निवेश और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता का अभाव था। ताइवान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों ने बड़े पैमाने पर निवेश और तकनीकी साझेदारियों के माध्यम से सेमीकंडक्टर उद्योग में उल्लेखनीय प्रगति की। भारत इस दौड़ में पीछे रह गया और कई दशकों तक वैश्विक सेमीकंडक्टर मानचित्र पर अपनी उपस्थिति दर्ज नहीं करा सका। भारत में दुनिया के लगभग 20% चिप डिजाइन इंजीनियर हैं, और बेंगलुरु, हैदराबाद, नोएडा जैसे शहर वैश्विक चिप डिजाइन के प्रमुख केंद्र बन चुके हैं। बड़ी सेमीकंडक्टर कंपनियाँ ने भारत में अपने बड़े R&D केंद्र स्थापित कर भारतीय इंजीनियरों की चिप डिजाइन में गहरी विशेषज्ञता को मान्यता दी है, जो सिर्फ कोडिंग तक सीमित नहीं बल्कि पूरी डिजाइन प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की पहल ने भारत के सेमीकंडक्टर उद्योग को नई दिशा और गति प्रदान की है।

उनके नेतृत्व में शुरू किया गया सेमीकंडक्टर मिशन 'फ्रॉम बैकएंड टू फुल-स्टैक' दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका उद्देश्य चिप डिजाइन, फैब्रिकेशन (निर्माण), पैकेजिंग और परीक्षण की संपूर्ण श्रृंखला को भारत में विकसित करना है। साथ ही, 'मेक इन इंडिया, ट्रस्टेड बाय द वर्ल्ड' की परिकल्पना के तहत भारत में निर्मित चिप्स न केवल देश की आवश्यकताओं को पूरा करें, बल्कि अपनी उत्कृष्ट गुणवत्ता के कारण वैश्विक स्तर पर भी भरोसेमंद बनें।

प्रधानमंत्री जी का विज़न स्पष्ट है; वह दिन दूर नहीं जब दुनिया कहेगी- डिज़ाइन इन इंडिया, मेड इन इंडिया, ट्रस्टेड बाय द वर्ल्ड। इस दिशा में सरकार की तीन प्रमुख प्राथमिकताएँ हैं पहली प्राथमिकता "फाइल टू फैक्ट्री" की गति में सरकार प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाकर नौकरशाही की देरी को कम कर रही है। निवेशकों और उद्योगों के लिए फाइल से लेकर फैक्ट्री तक की प्रक्रिया को तेज किया जा रहा है, क्योंकि सेमीकंडक्टर उद्योग में समय की अहम भूमिका है। दूसरी कुशल कार्यबल का निर्माण जिसमे भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा जनसंख्या है। सरकार का फोकस सेमीकंडक्टर उद्योग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक विशाल और कुशल कार्यबल तैयार करना है। सरकार की तीसरी प्राथमिकता 'चिप्स टू स्टार्टअप' जैसे कार्यक्रम जिनमें विद्यार्थियों और स्टार्टअप्स को चिप डिजाइन और संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया जा रहा है। इससे भारत में नवाचार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

'प्लग-एंड-प्ले' इंफ्रास्ट्रक्चर में सरकार सेमीकंडक्टर पार्कों के माध्यम से निवेशकों को तैयार बुनियादी ढांचा जैसे भूमि, बिजली और पानी प्रदान कर रही है, ताकि वे तुरंत अपना काम शुरू कर सकें। भारत में सेमीकंडक्टर इंडिया कार्यक्रम की शुरुआत 2021 में हुई थी। इसके तहत 2023 तक देश के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट को मंजूरी मिल गई, जबकि 2024 में कई अन्य प्लांट्स को भी स्वीकृति प्रदान की गई। इसके साथ ही 2025 में पाँच अतिरिक्त परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जिससे वर्तमान में कुल 10 सेमीकंडक्टर परियोजनाएँ प्रगति पर हैं, जिनमें 18 अरब डॉलर से अधिक का निवेश शामिल है।

इस विजन को साकार करने के लिए कई प्रमुख इनिशिएटिव लिए गए जिनमें इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन का केंद्रीय कार्यक्रम है, जिसे 76,000/- करोड़ के कुल बजट के साथ शुरू किया गया था। सरकार की प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव स्कीम (PLI) चिप फैब्रिकेशन, पैकेजिंग और परीक्षण इकाइयों की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है, जिससे भारत में बड़े निवेश आकर्षित हो रहे हैं।

इन पहलों के कारण, भारत में कई स्वदेशी चिप डिजाइन स्टार्टअप सामने आए हैं। इनमें से कुछ कंपनियाँ रक्षा, एयरोस्पेस, इलेक्ट्रिक वाहन और ऊर्जा प्रणालियों जैसे क्षेत्रों के लिए विशेष चिप्स विकसित कर रही हैं। वैश्विक सेमीकंडक्टर बाजार वर्तमान में 600 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है, और भारत इस तेजी से बढ़ते क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हिस्सेदारी हासिल करने की योजना बना रहा है। अनुमान है कि 2030 तक यह बाजार 01 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच जाएगा, जिसमें भारत की भूमिका भी काफी प्रभावशाली होगी। भारत में सेमीकंडक्टर सेक्टर में 2026 तक लगभग 10 लाख नए रोजगार सृजित होने की उम्मीद है, जिसके लिए कुशल कार्यबल तैयार करना शैक्षणिक संस्थानों की अहम जिम्मेदारी होगी। वर्तमान में ताइवान, अमेरिका, चीन, दक्षिण कोरिया, और मलेशिया जैसे देश प्रमुख रूप से चिप निर्माण करते हैं।

लेकिन अब भारत ने भी स्वदेशी चिप विकसित कर ली है, जो 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की ओर एक बड़ा कदम है। जल्द ही भारत में चिप का वाणिज्यिक उत्पादन शुरू होगा, जिससे कार, फ्रिज, टीवी जैसी घरेलू और इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों में इस्तेमाल होने वाली चिप्स देश में ही निर्मित होंगी। यह कदम भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को आत्मनिर्भर बनाने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में विश्वसनीय खिलाड़ी के रूप में स्थापित करेगा। आज, भारत का सेमीकंडक्टर इतिहास केवल चुनौतियों और असफलताओं का नहीं, बल्कि दृढ़ता और पुनरुत्थान का है।

एक मजबूत सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम न केवल भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूती देगा, बल्कि मोबाइल, कंप्यूटर, दूरसंचार, अंतरिक्ष वाहन, घरेलू उपकरण, स्वास्थ्य क्षेत्र, औद्योगिक स्वचालन, ऊर्जा क्षेत्र, और रक्षा उपकरणों जैसी हर तकनीक में आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करते हुए भारत को वैश्विक तकनीकी परिदृश्य में अग्रणी स्थान दिलाएगा।

डॉ. संजय कुमार शर्मा

"सतर्कता"

सतर्क तो हम हैं अपने अधिकारों के प्रति
सतर्क तो अब होना पड़ेगा अपने दायित्वों के प्रति

पैसों का लेनदेन ही नहीं है भ्रष्टाचार
कर्तव्यों एवं दायित्वों का पालन न करना भी है भ्रष्टाचार

संस्था या समाज से नहीं है भ्रष्टाचार
व्यक्तिगत सोच से पनपा है भ्रष्टाचार

पखवाड़ा व दिवस मनाने से कुछ नहीं होगा
हरेक को अब अपनी सोच बदलना होगा

शपथ तो ऐसी हम कई बार लेते हैं
लेकिन समय आने पर खुद व खुद तोड़ लेते हैं

गलत व सही को स्वयं से समझना होगा
भ्रष्टाचार मुक्त भारत तभी संभव होगा

सिलीकॉन एवं जरमेनियम दोनों है जरूरी।
इलेक्ट्रॉनिक्स इन दोनों के बिना नहीं है पूरी ।।
एक का नी ज्यादा तो एक का है कम।
एक ताप सहता ज्यादा तो एक सहता है कम ।।
डायोड को ध्यान से समझ लेना आप।
ट्रांजिस्टर तो है उसका भी बाप ।।
जीनर को हल्के में ना लेना श्याम।
उल्टे में वो करता है सही से काम ।।
ओपेम को भी समझना है जरूरी।
उसके बिना इलेक्ट्रॉनिक्स है अधूरी ।।
सीमॉस एवं मोसफेट का है जमाना।
आईसी के अंदर झांक कर ये जाना ।।
व्हीएलएसआई को कभी ना है छोड़ना।
आगे के जमाने में उसे ही है दोड़ना ।।
फोरियर का बेस है प्योर मैथेमेटिक्स।
ढंग से समझ लेना अब तुम मैट्रिक्स ।।
सिलीकॉन एवं जरमेनियम दोनों है जरूरी।
इलेक्ट्रॉनिक्स इन दोनों के बिना नहीं है पूरी।

नोट

संस्थान के कर्मचारी एवं उनके परिवार सदस्य जो अपना लेखन कौशल दिखाने में रुचि रखते हैं, उनसे अनुरोध है कि वे अपने लेख, कविताएँ, लघु कथाएँ राजभाषा सेल (**rajbhashacell@nitttrbpl.ac.in**) को मेल करें।
आपकी प्रस्तुत प्रविष्टियाँ तदनुसार प्रकाशित की जाएँगी।

समाचार पत्रों में संस्थान की गतिविधियां

शिक्षा के साथ उद्यमिता जरूरी, युवाओं को आत्मनिर्भर बनाएगा: डॉ. भटनागर

NITTTR भोपाल में NEP-2020 कार्यशाला

पॉलीटेक्निक शिक्षा में नवाचार और सुधार

शिक्षा का हर वर्ग, परिवार से होता है जुड़ाव

▸ एनआईटीटीटीआर में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

भोपाल, 1 नवंबर. एनआईटीटीटीआर भोपाल और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: पॉलीटेक्निक शिक्षा में नवाचार एवं क्रियान्वयन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है.

इस अवसर पर डॉ. अतुल कोठारी, सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने कहा शिक्षा का हर वर्ग हर परिवार से जुड़ाव होता है. राष्ट्रीयता से भरपूर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 समग्र, सर्वांगीण, ज्ञान, कौशल, चरित्र विकसित करने वाली है, जो विकसित भारत की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी. एनआईटीटीटीआर भोपाल के निदेशक प्रोफेसर चन्द्र चारू त्रिपाठी ने संस्थान द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप विभिन्न राज्यों के लिए तैयार किये गए पाठ्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि हम सभी को मिलकर इसके क्रियान्वयन में योगदान देना है. इस कार्यशाला का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में पॉलिटेक्निक शिक्षा की भूमिका को सुदृढ़ करना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम संरचना, उद्योग-आधारित परियोजनाओं और नवाचार को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना तथा सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान को सुदृढ़ करना है. विशिष्ट अतिथि प्रो राजीव त्रिपाठी, कुलगुरु, आरजीपीवी ने कहा आज स्टूडेंट को क्रिएटिव बनाना शिक्षक का दायित्व है.

Vande Mataram is the soul of India: Prof. CC Tripathi

Bhopal: A grand celebration was held on Friday at NITTTR, Bhopal, to mark the 150th anniversary of the composition of the national anthem, "Vande Mataram." In his emotional address, Institute Director Prof. C.C. Tripathi stated that this song, written by Bankim Chandra Chattopadhyay in 1875, is not just a song, but the soul of India and the inspiration for the freedom struggle.

During the program, he shared with students and staff the historical significance of the song and the message it conveys to strengthen the spirit of patriotism. He stated that "Vande Mataram" is not just a word, but a mantra, a unique energy, a resolve, and a symbol of deep devotion to the nation. This word is deeply rooted in our history, our culture, and our soul. Heartiest congratulations to all of you on this historic occasion of 150 glorious years of Vande Mataram.

Faculty members, officers, staff, and students sang "Vande Mataram" in unison, paying homage to Mother India. An atmosphere of patriotism and pride was reflected in the entire NITTTR campus today.

NATIONAL EDUCATION POLICY : FORGING NEW INDIA THROUGH KNOWLEDGE, INNOVATION, AND NATIONAL SPIRIT

The Cliff News

The National Education Policy (NEP) stands not just as a roadmap for employment, but as a powerful blueprint for nation-building and the nurturing of human values, said Dr. Atul Kothari, National Secretary of Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, New Delhi.

Speaking at the inauguration of a two-day national workshop at the National Institute of Technical Teachers Training and Research (NITTTR), Bhopal, Dr. Kothari emphasized that education forms the vital link connecting every class and family in society.

एनआईटीटीटीआर में हुआ राष्ट्रगीत की 150वीं वर्षगांठ पर आयोजन

एनआईटीटीटीआर की 'संपर्क सरिता' को राजभाषा पुरस्कार 2025

नईदुनिया, प्रतिनिधि, भोपाल। एनआईटीटीटीआर की प्रतिष्ठित हिंदी पत्रिका 'संपर्क सरिता' को विश्व हिंदी परिषद द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में राजभाषा पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। यह समारोह नई दिल्ली के विज्ञान भवन में भव्य रूप से आयोजित हुआ, जिसमें कई देशों के प्रतिनिधियों सहित 300 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

संस्थान की इस पत्रिका को यह सम्मान लगातार 26 वर्षों से हिंदी में उत्कृष्ट प्रकाशन और उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार को पत्रिका के संपादक प्रो. पी. के. पुरोहित तथा सह-संपादक श्री संजय त्रिपाठी ने ग्रहण किया। विश्व हिंदी परिषद ने संपर्क सरिता के साथ-साथ प्रो. पीके पुरोहित को भी विशेष रूप से सम्मानित किया। उन्हें हिंदी भाषा के प्रति समर्पण, विज्ञान के लोकव्यापीकरण में योगदान, राजभाषा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, हिंदी में अनेक पुस्तकों के लेखन तथा लोकप्रिय व्याख्यानों के लिए विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया। परिषद ने कहा कि प्रो. पुरोहित का योगदान हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की प्रभावी भाषा बनाने में महत्वपूर्ण रहा है।

एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान संस्थान की हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता और प्रयासों का प्रतिफल है। उन्होंने न केवल संस्थान बल्कि हिंदी जगत के लिए गौरव [illegible]। राजभाषा पुरस्कार प्राप्त कर 'संपर्क सरिता' ने [illegible] सिद्ध किया है [illegible], निरंतरता [illegible] हिंदी प्रकाशन को पहचान दिला सकती है। उपलब्धि हिंदी को वैश्विक [illegible] के रूप में स्थापित करने दिशा में महत्वपूर्ण कदम [illegible] रही है।

पत्रिका संपर्क सरिता को मिला राजभाषा पुरस्कार

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 23 नवंबर. एनआईटीटीटीआर भोपाल की हिंदी पत्रिका संपर्क सरिता को वर्ष 2025 का राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ है. यह सम्मान विश्व हिंदी परिषद द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रदान किया गया. पुरस्कार पत्रिका के संपादक प्रो. पीके पुरोहित और संजय त्रिपाठी ने ग्रहण किया.

संपर्क सरिता को लगातार छब्बीस वर्षों से उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए हिंदी पत्रिकाओं की श्रेणी में सम्मानित किया गया है. विश्व हिंदी परिषद ने प्रो. पुरोहित को हिंदी भाषा के प्रति समर्पण, विज्ञान के लोकव्यापीकरण, राजभाषा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से और प्रभावी बनाने, हिंदी में पुस्तक लेखन तथा व्याख्यानों के लिए विशिष्ट रूप से सम्मानित किया. संस्थान के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने राजभाषा प्रकोष्ठ को इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा कि यह सम्मान महत्वपूर्ण उपलब्धि है और हिंदी के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में कई देशों के प्रतिनिधियों सहित तीन सौ से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया.

NITTTR seminar highlights collaboration and innovation in aerospace industry

HAL CEO says India can establish leadership in global defense

Bhopal: In an effort to promote indigenization in the defense production sector and strengthen collaboration between academia, local industries, and defense manufacturers, the National Institute of Technical Teachers Training and Research (NITTTR), Bhopal, organized a seminar on "Innovation in Defense Technology for a Self-Reliant India" on Monday. Hindustan Aeronautics Limited (HAL), Nashik, CEO, Saket Chaturvedi, addressing the seminar as the chief guest, said that India's true strength lies in the partnership between our young engineers, research institutions, and industry. If we work together to develop technology indigenously, India can establish leadership in the global defense and aviation sector in the coming years.

He said that HAL today is not only a leader in fighter aircraft development but is also focusing on completely indigenizing several critical systems. For this, the role of institutions like NITTTR is crucial.

State poised to play a strong role: Tripathi

NITTTR Director Prof. C.C. Tripathi stated that Madhya Pradesh is poised to play a strong role in indigenous technological development, and NITTTR Bhopal is emerging as a central knowledge-supporting institution. NITTTR is preparing a comprehensive report on the capabilities of institutions in Madhya Pradesh that can contribute to the development and manufacturing of products required by HAL.

R.K. Bharti, highlighting the objectives of the symposium, said that this initiative by NITTTR Bhopal is commendable and that cooperation and collaboration between HAL and private industries is essential in the aviation and aerospace sectors. In the defense sector, the supply of parts is essential to jet speeds.

P.B. Baghel delivered a lecture on "Design, Development, and Certification of Fighter Aircraft." Dr. Ajit Bhandakar discussed "Indigenization in Defense Technology." Other guests included Ashok Patel, C.P. Sharma and Dean of NITTTR Bhopal Dr. Sanjay Agarwal, Dr. Manish Bhargava, Dr. P.K. Purohit, Prof. M.A. Rizvi along with representatives from various industries.

निटरः आत्मनिर्भर भारत के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी में सृजन पर संगोष्ठी का आयोजन

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ भोपाल

रक्षा उत्पादन क्षेत्र के स्वदेशीकरण को बढ़ावा देने और शिक्षा जगत, स्थानीय उद्योगों और रक्षा निर्माताओं के बीच सहयोग को मजबूत करने के प्रयास में, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) में आत्मनिर्भर भारत के लिए रक्षा प्रौद्योगिकी में सृजन विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) नासिक सीईओ साकेत चतुर्वेदी ने मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी को संबोधित किया। भारत की वास्तविक शक्ति हमारे युवा इंजीनियर्स, अनुसंधान संस्थानों और उद्योग जगत की आपसी साझेदारी में है। यदि हम टेक्नोलॉजी को स्वदेशी रूप से विकसित करने की दिशा में मिलकर काम करें, वर्षों में भारत वैश्विक रक्षा और एविएशन सेक्टर में नेतृत्व स्थापित कर सकता है।

टेक्नोलॉजी को स्वदेशी रूप से विकसित करने की दिशा में मिल कर करें कार्य

निटर तैयार कर रहा संस्थानों की क्षमताओं पर रिपोर्ट

निटर के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने कहा कि मध्य प्रदेश स्वदेशी तकनीकी विकास में मजबूत भूमिका निभाने को तैयार है, और निटर इसमें एक केंद्रीय ज्ञान-सहयोगी संस्थान के रूप में उभर रहा है। निटर मध्य प्रदेश के उन संस्थानों की क्षमताओं पर एक व्यापक रिपोर्ट तैयार कर रहा है, जो एचएएल द्वारा आवश्यक उत्पादों के निर्माण और विकास में योगदान दे सकते हैं। आर.के भारती ने इस संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पहल सराहनीय है। एविएशन और एयरोस्पेस के क्षेत्र में एचएएल इंडस्ट्रीज के बीच में कोऑपरेशन और कोलैबोरेशन जरूरी है।

हिंदीः ज्ञान, संस्कृति और वैश्विक संवाद का सशक्त माध्यम

- एनआईटीटीटीआर भोपाल में हिंदी कार्यशाला में प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने भाषा के वैश्विक महत्व और संवाद में योगदान पर जोर दिया।
- कार्यशाला में कर्मचारियों को कार्यालीन अनुवाद, AI टूल्स और राजभाषा नीति की जानकारी दी गई, हिंदी को कार्यस्थल में बढ़ावा देने हेतु प्रेरित किया।

सिटी न्यूज़ ■ भोपाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर), भोपाल में राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं अनुवाद सम्बन्धी विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक और नराकास अध्यक्ष प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी बड़े उद्देश्य को हासिल करने के लिए एकजुटता और संवाद आवश्यक है, और इसमें भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि हिंदी आज वैश्विक स्तर पर पहचान बना रही है और इसे सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास होना चाहिए।

प्रो. त्रिपाठी ने यह भी बताया कि मानव विकास की नींव उसकी मातृभाषा में ही होती है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में लोगों को जोड़ने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान रहा है। निटर भोपाल का राजभाषा प्रकोष्ठ लगातार हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रयास कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप संस्थान को पिछले दो वर्षों में विभिन्न राष्ट्रीय मंचों से सात पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में आकाशवाणी भोपाल के राजभाषा अधिकारी श्री भारत भूषण देशमुख ने कार्यालीन अनुवाद पर प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बताया कि अनुवादक को शब्दों के जोड़-घटाव में स्वतंत्रता होती है, लेकिन भावनाओं का सही रूप में संप्रेषण करना अनुवादक की जिम्मेदारी है। उन्होंने कर्मचारियों से आग्रह किया कि हिंदी को अपने मूल कार्यों में बढ़ावा दें और अंग्रेजी का उपयोग केवल अनुवाद के लिए करें।

अन्य विशेषज्ञों में श्री संजय त्रिपाठी, सचिव-नराकास ने AI अनुवाद टूल्स पर व्याख्यान दिया, जबकि संस्थान की सचिव श्रीमती [illegible] चतुर्वेदी ने राज्य की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 पर विस्तृत जानकारी साझा की। राजभाषा समन्वयक डॉ. पी.के. पुरोहित ने संस्थान की राजभाषा की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदी आज विश्व पटल पर अपना विशेष स्थान बना चुकी है। उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी का विस्तार केवल भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है। विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि हिंदी को न केवल जीवन में, बल्कि कार्यस्थल पर भी अधिकतम उपयोग किया जाए।

एनआईटीटीटीआर भोपाल में हिंदी कार्यशाला आयोजित, कर्मचारियों को अनुवाद, AI टूल्स और राजभाषा नीति प्रशिक्षण, हिंदी को वैश्विक और कार्यस्थल में सशक्त बनाने पर जोर।

कार्यशाला में एनआईटीटीटीआर भोपाल के साथ-साथ गुजरात, गोवा, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के अधिकारी और कर्मचारी भी उपस्थित थे। कार्यशाला का उद्देश्य हिंदी को आधुनिक तकनीकी और प्रशासनिक कार्यों में प्रभावी रूप से लागू करना और कर्मचारियों को इसके प्रति जागरूक करना था।

Navotkarsh 2025, annual fest kicks off at NITTTR Bhopal

■ Staff Reporter

NITTTR Bhopal's annual festival, Navotkarsh 2025, officially kicked off, bringing together postgraduate and PhD students for a celebration of innovation, sports, culture, and intellectual growth. The event offers a platform for students to showcase their talents, foster collaborations, and balance academic pursuits with creative and physical activities.

Addressing the students, Prof. C.C. Tripathi, Director, NITTTR Bhopal, emphasized that student success goes beyond academic achievements. "We are delighted to provide a platform where students can explore new interests, forge meaningful connections, and feel supported by their community," he said. He highlighted that Navotkarsh 2025 is designed to bring together bright minds from diverse backgrounds to engage in friendly competition and meaningful discussions on the intersection of physical fitness, intellectual growth, and holistic development.

A dancer performing at the event.

Prof. P.K. Purohit, Dean of Corporate and International Relations, NITTTR Bhopal, noted that the festival particularly focuses on postgraduate and PhD students, who often face intense academic and research pressures. "This event is not just about sports; it is a celebration of the spirit of innovation and collaboration," he said. The festival features a wide range of activities, including sports, cultural programs, and literary events, highlighting the importance of a well-rounded education that nurtures both body and mind.

Distinguished guests, including Vandana Tripathi, Prof. Sanjay Agarwal, Prof. Manish Bhargava and other faculty members, were also present at the inaugural event.

एनआईटीटीटीआर भोपाल में हिंदी कार्यशाला का आयोजन सम्पन्न हुआ

सीएनएन सेंट्रल न्यूज़ एंड नेटवर्क-आईटीडीसी इंडिया प्रेस /आईटीडीसी न्यूज़ भोपाल। राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईटीटीटीआर) भोपाल में राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा "राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं अनुपालन सम्बन्धी" विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कर्मचारियों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक और नराकास के अध्यक्ष प्रो. चंद्र चारु त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी बड़े उद्देश्य को हासिल करने के लिए एकजुटता और संवाद जरूरी है, और इसमें भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी वैश्विक भाषा बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। मनुष्य के विकास की नींव उसकी मातृभाषा में ही होती है। भारत को स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में लोगों को जोड़ने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान रहा है। निटर भोपाल का राजभाषा प्रकोष्ठ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सतत प्रयत्नशील है, जिसके परिणामस्वरूप संस्थान को गत 02 वर्षों में 07 पुरस्कार विभिन्न राष्ट्रीय मंचों से प्राप्त किये है। विषय विशेषज्ञ के रूप में आइसर भोपाल के राजभाषा अधिकारी भारत भूषण देशमुख ने "कार्यालीन अनुवाद" सम्बन्ध कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बताया कि अनुवादक को शब्दों के जोड़-घटाव में स्वतंत्रता होती है, लेकिन भावनाओं का सही रूप में संरक्षण करना अनुवादक की जिम्मेदारी है। उन्होंने कर्मचारियों से यह आग्रह किया कि वे हिंदी को अपने मूल कार्यों में बढ़ावा दें और अंग्रेजी को केवल अनुवाद की भाषा के रूप में उपयोग करें। अन्य विशेषज्ञ के रूप में संजय त्रिपाठी, सचिव-नराकास ने "कृत्रिम बुद्धिमत्ता" अनुवाद टूल्स पर व्याख्यान दिया एवं संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ की सचिव बबली चतुर्वेदी ने "संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976" विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

नवाचार, खेल और बौद्धिक विकास के संगम का उत्सव मनाएं: प्रो. त्रिपाठी

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल

एनआईटीटीटीआर भोपाल में वार्षिक महोत्सव "नवोत्कर्ष-2025" तीन दिवसीय उत्सव के रूप में शुरू हुआ।

समविश्वविद्यालय घोषित होने और पहले बैच के स्वागत के बाद आयोजित यह पहला महोत्सव है, जिसका उद्देश्य पोस्टग्रेजुएट और पीएचडी विद्यार्थियों को नवाचार, खेल और बौद्धिक गतिविधियों का एक साझा मंच प्रदान करना है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए निदेशक प्रो. सी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि विद्यार्थियों की सफलता केवल शैक्षणिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संतुलन और उत्कृष्टता हासिल करने से भी मापी जाती है। उन्होंने कहा कि नवोत्कर्ष छात्रों के लिए अपनी रुचियों को खोजने, नई क्षमताएं विकसित करने और समुदाय का सामर्थ्य महसूस करने का अवसर देता है। डीन, कॉर्पोरेट एवं इंटरनेशनल रिलेशंस, प्रो. पी.के. पुरोहित ने बताया कि यह आयोजन शोध और अकादमिक दबाव में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए राहत और ऊर्जा का स्रोत है। महोत्सव खेल, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से समग्र शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। कार्यक्रम में श्रीमती वंदना त्रिपाठी, प्रो. संजय अग्रवाल, प्रो. मनीष भार्गव सहित संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। 'नवोत्कर्ष-2025' को संस्थान के एकेडमिक कैलेंडर में एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है।

NITTTR's programme to train teachers in IPR, semi-conductor research; will boost innovation

■ Staff Reporter

NITTTR Bhopal has launched a series of training programs in Semiconductor Science and Technology and Intellectual Property Rights (IPR). The initiative, aimed at building awareness among teachers, hopes to translate into better guidance for students, encouraging research, innovation, and career opportunities in the rapidly growing semiconductor sector.

According to Prof. C.C. Tripathi, Director of NITTTR Bhopal, India is emerging as a key player in the global semiconductor industry, making it essential for educators to prepare students for careers in this field. "Teachers play a crucial role in creating awareness through research and innovation. Trained faculty can make the curriculum more industry-oriented and guide students in semiconductor-based projects, internships, and career planning," he said.

Prof. P.K. Purohit, Dean (Corporate and International Relations) and Madhya Pradesh Coordinator, added that NITTTR is conducting 75 training programs for higher education faculty this year. So far, more than 1,800 teachers have been trained through 51 programs, and 250 students have benefited through eight related programs.

The IPR training covers essential areas such as copyrights, patents, trademarks, industrial designs, GI tags, trade secrets, and plant variety protection. Teachers are being taught to protect their academic work, use others' content correctly, comply with copyright rules, avoid plagiarism, and guide students in the digital era.

The training also emphasizes the importance of filing patents and copyrights for original research, projects, or innovative ideas. A solid understanding of IPR ensures teachers can innovate responsibly while preventing unintentional misuse of copyrighted materials.

The team of trainee teachers.

सामाजिक उद्यमिता और नवाचार पर प्रेरणादायक व्याख्यान

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के इंस्टीट्यूट इनोवेशन काउंसिल द्वारा सामाजिक उद्यमिता एवं नवाचार विषय पर एक प्रेरणादायक व्याख्यान आयोजित किया गया। [illegible]

[illegible] सरकार द्वारा निर्मित एक लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

निटर के निदेशक प्रो. सीसी त्रिपाठी ने कहा कि [illegible]

[illegible] उपस्थित रहे।

NITTTR hosts lecture on social entrepreneurship, innovation

■ Staff Reporter

THE National Institute of Technical Teachers' Training and Research (NITTTR), Bhopal, recently hosted a lecture on Social Entrepreneurship and Innovation, delivered by [illegible] of Raag Innovations. [illegible]

[illegible]

NITTTR Director, Professor C.C. Tripathi, said that in today's [illegible]

[illegible]

The session was chaired by Prof. [illegible] Tripathi, Head of the Department of Mechanical Engineering, [illegible]

NITTTR launches training for higher education faculty

Programs to boost awareness in semiconductor technology and IPR

Bhopal: NITTTR Bhopal has initiated five intensive 5-day training programs for faculty members of the Madhya Pradesh Higher Education Department, focusing on Semiconductor Science and Technology and Intellectual Property Rights (IPR). The goal is to empower teachers with advanced knowledge in these emerging areas so they can, in turn, prepare students for future opportunities.

Institute Director Prof. C.C. Tripathi stated that the world today is looking toward India as a major player in the semiconductor sector, which has become a national priority. He emphasized that teachers play a crucial role in fostering awareness, research, and innovation among students. With proper training, faculty members can make the curriculum industry-oriented and guide students effectively in semiconductor-related projects, internships, and career pathways.

Prof. P.K. Purohit, Dean (Corporate and International Relations) and Madhya Pradesh Coordinator, highlighted that the institute is conducting 75 training programs for Higher Education Department teachers this year. Of these, 51 programs have already trained more than 1,800 faculty members in emerging fields, while 250 students have been trained through eight specialized programs.

अक्टूबर माह में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

एन.आई.टी.टी.टी.आर.भोपाल

Digitization & Industry 4.0

नवम्बर माह में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

Being Safe Securely in the Campus

Vigilance Awareness Week 2025

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

दिसम्बर माह में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

नवोत्कर्ष

नवोत्कर्ष

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल
National Institute of Technical Teachers' Training and Research, Bhopal

जनसंपर्क प्रकोष्ठ
(संपर्क सरिता)

राजभाषा प्रकोष्ठ

समविश्वविद्यालय - विशिष्ट श्रेणी

राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, भोपाल

(समविश्वविद्यालय - विशिष्ट श्रेणी)

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार